देश में अमन चैन के लिए जुटे धर्मगुरु

मन्दिर, मस्जिद नहीं, मुल्क में शांति जरूरी

सरदारशहर 29 सितम्बर, 2010

अयोध्या मसले पर फैसला आने से ठीक एक दिन पूर्व यहां के तेरापंथ भवन में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में विभिन्न धर्मगुरुओं ने जुटकर देश में अमन, चैन बनाने का संदेश दिया। जैन, ईसाई, बौद्ध, इस्लाम आदि धर्मों के गुरुओं ने देश की जनता से आह्वान किया कि अयोध्या पर कोर्ट का फैसला कुछ भी आये, देश में शांति रहनी चाहिए, यहां पर मन्दिर, मस्जिद जरूरी नहीं है, आज जरूरी है मुल्क में शांति रहे, सभी धर्मगुरुओं ने अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित सञ्प्रदायिक सौहार्द दिवस को आज के लिए सबसे ज्यादा जरूरी बताया।

कार्यक्रम को सान्निध्य में प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि भारत एक ऐसा देश है जहां पर अनेकता, भिन्नता देखने को मिलती है। यहां पर अनेक जातियों के लोग विभिन्न भाषाओं को बालने वाले लोग हैं। अनेक सञ्प्रदाय हैं। इस अनेकता में भी एकता नजर आती है, क्योंकि हम सब पहले भारतीय हैं, मानव हैं। उन्होंने कहा कि अंगुलियां अलग-अलग साईज की होती है पर सब एक ही हाथ से जुड़ी हुई होती है। जब सब मिलकर कार्य करती है तभी कार्य सफल होता है। वैसे ही सञ्प्रदाय अलग-अलग हो सकते हैं पर सभी मानवता एवं अहिंसा से जुड़े हुए हैं अहिंसा मानव धर्म है। सभी प्राणियों में अहिंसा का विकास होना चाहिए। जहां अहिंसा, अनुकंपा और दया की चेतना है वहां प्रेम रहता है, अनुकंपा, अहिंसा की चेतना मानव मानव में जाग जाये तो साञ्प्रदायिक सौहार्द संभव हो जायेगा।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि जो धर्म गुरु जोड़ना सिखाता है उसका विरोध नहीं होता। जो तोड़ने का कार्य करता है उसका विरोध होता है, उसके प्रति विद्वेष भावना पनपती है, आचार्य महाप्रज्ञ ने जोड़ने का कार्य किया इसलिए उनको हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध धर्मों के लोगों ने सञ्मान दिया एवं स्वागत किया। उन्होंने अयोध्या विवाद पर आने वाले फैसले की चर्चा करते हुए कहा कि उच्च न्यायालय का निर्णय किसी के लिए अनुकूल हो सकता है और किसी के लिए प्रतिकूल हो सकता है पर कोर्ट के फैसले का सञ्मान होना चाहिए। इस घड़ी में हम भाईचारे को कायम रखें, अमन चैन बना रहे, इस ओर जागरूकता आवश्यक है।

इस्लाम धर्म के प्रतिनिधि मौलवी इब्राहिम ने कहा कि धर्म के नाम पर आज जो नफरत फैलाई जा रही है वह सियासत का कार्य है, मजहब का नहीं। धर्म इंसानियत सिखाता है, मुल्क से मोहब्बत करना सिखाता है। उन्होंने कहा कि अयोध्या में राम मन्दिर बने या न बने। मस्जिद बने या न बने, पर मुल्क में शांति बनी रहनी चाहिए।

मुंबई से समागत बौद्ध धर्म के भदंत राहुल बौधि ने कहा कि धर्म मैत्री, शांति और प्रेम का वातावरण निर्माण करता है, पर कुछ लोग जो गलत मतलब निकालकर भय का वातावरण फैलाते हैं, द्वेष के भाव पैदा करते हैं ऐसा करने

वाले आदमी लोग हैं, क्योंकि उनमें क्रोध, मान, ज़य, लोभ रहते हैं। उन्होंने लोगों से अमन चैन कायम रखने की अपील की।

मुज़्बई से उपस्थित हुए ईसाई धर्म के फादर माइकल रिजोरिया ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने सज़्प्रदायिक सौहार्द का दीप जलाया। आज हमें उनका स्मरण करते हुए एक अणुव्रत स्वीकार करें, वह अणुव्रत होगा कल आने वाले कोर्ट के निर्णय पर सभी पक्षों द्वारा शांति बनाई जायेगी। हम स्वयं शांति रखें और दूसरों को इसके लिए प्रेरित करें, आज ऐसा संकल्प होना चाहिए।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा कि आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के रूप में सभी धर्मों का अध्ययन करते हुए एक नई आचार संहिता दी। अणुव्रत सर्व सज़्प्रदायों के प्रति सद्भाव रखने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि हमेशा सौहार्द की अपेक्षा रही है, पर आज के क्षण इसकी ज्यादा जरूरत है। कोर्ट का जो भी फैसला आये उसमें सबको सौहार्द से समझना है।

मिनाक्षी द्वारा सुमधुर स्वरों में प्रस्तुत किये गये अणुव्रत गीत से प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में हजारों लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम में पधारे सभी धर्मगुरुओं का साहित्य एवं मोमेंटों द्वारा समिति के अध्यक्ष रावतमल सैनी एवं चातुर्मास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष बिमल कुमार नाहटा ने किया। सज़्तमल बोथरा ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मुज़्बई के राजकुमार चपलोत, धर्मगुरुओं एवं अणुव्रत समिति के कार्यकर्त्ताओं का आभार जताया। संचालन श्रीमती राजू चौहान ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ युगपुरुष थे : फॉदर

सरदारशहर 29 सितज़्बर, 2010।

मुज़्बई से समागत बौद्ध धर्म एवं ईसाई धर्म के प्रतिनिधियों ने आचार्य महाश्रमण से वार्तालाप करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ युगपुरुष थे। युगपुरुष किसी एक सज़्प्रदाय में जकड़े नहीं रहते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने मानव मात्र के लिए कार्य किया। शांति, सौहार्द का संदेश दिया। आचार्यश्री महाश्रमण, भदंत राहुल बौधि, फादर डॉ. माइकल रिजोरिया, मुनि सुखलाल आदि के बीच करीब 25 मिनट तक चले इस वार्तालाप में गीता, धज़्मपद, जैनागम आदि में धर्म के स्वरूपों पर चर्चा होने के साथ ही अयोध्या मसले पर भी चर्चा हुई। इस मौके पर धर्मगुरुओं ने आचार्य महाश्रमण को भद्र पुरुष बताया एवं शांति सौहार्द को कायम करने वाले कार्यक्रमों को आगे बढ़ाते रहने की आशा व्यक्त की। आचार्य महाश्रमण ने सभी को आचार्य महाप्रज्ञ के आयामों एवं अधूरे कार्यों को पूरा करने की तरफ गतिशील होने की जानकारी दी। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि सभी में अनुकंपा की चेतना का विकास हो यह जरूरी है।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)